1.4. परिचर्या के सिद्धान्त

सैद्धान्तिक	अंक – 100	व्याख्यान – 100
प्रायोगिक	अंक – 100	व्याख्यान – 30

परिचर्या के सिद्धान्त, आयुर्वेद परिचय एवं सिद्धान्त

1. परिचर्या का परिचय, अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र, सिद्धान्त एवं इतिहास।
2. नर्स की परिभाषा एवं अर्थ, व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक गुण ।
3. परिचर्या में आचार संहिता तथा परिचारक के कर्तव्य एवं दायित्त्व।
4. रोगी परीक्षण -
   a. आतुर एवं स्वस्थ का परिचय, स्वस्थ स्थिति के आयाम ।
   b. रोगी परीक्षण के सिद्धान्त एवं प्रक्रिया, रोगी की दर्शन, स्पर्शन, प्रश्न, श्रवण, ठेपण करने की प्रक्रिया ।
   c. रोगी की शारीरिक परीक्षा जैसे - ऊँचाई, भार, वाणी, तापमान, रक्तभार, नाड़ी गति, श्वसन गति, प्रकृति, सार की परीक्षा विधि का ज्ञान ।
   d. चिकित्सालय (बहिरंग एवं अन्तरंग) में रोगी प्रवेश की प्रक्रिया एवं रोगी निर्गमन प्रक्रिया का ज्ञान ।
   e. चिकित्सालय में भर्ती रोगी की समुचित देखभाल की प्रक्रिया एवं योजना निर्धारण का परिज्ञान ।
   f. रोगी विवरण पत्रक भरने का पूर्ण ज्ञान ।
   g. चिकित्सालय के बहिरंग एवं अन्तरंग विभाग में होने वाले सभी कार्यों का परिज्ञान
   h. चिकित्सालय के रिकार्ड संधारण का विशिष्ट ज्ञान।

11. रोगी की परिचर्या -
   a. रोगी की अवस्थानुसार परिचर्या।
   b. रोगी की बहिः एवं आभ्यन्तर परिमार्जन।
   c. आहार व्यवस्था, आहार-विहार विषयक सिद्धान्त का सामान्य परिचय।
   d. पीड़ा व वेदना के समय परिचर्या, रोगी के विभिन्न कार्यों में सहयोग प्रदान की प्रक्रिया।
12. शय्या के प्रकार, उपयोग एवं शय्या सुसज्जित करने की विधि, शय्याव्रण के कारण, लक्षण, उपचार तथा परिचर्या।
13. औषध देने की विधि का सैद्धान्तिक व प्रयोगात्मक ज्ञान ।
14. चिकित्सा सम्बन्धी कार्य एवं परिचर्या, बस्ति, एनिमा देना, योनिप्रक्षालन, गुद परिषेक तथा शीत-उष्ण प्लोत के प्रयोग का सैद्धान्तिक व प्रयोगात्मक ज्ञान।

15. स्वास्थ्य रक्षा अभिकरण (डब्ल्यू.एच.ओ., आयुष), चिकित्सालय, चिकित्सालयों के कार्य एवं प्रकार।
16. परिचारक का रोगी, रोगी के अभिभावक, अधिकारीगण, वरिष्ठ व कनिष्ट कर्मचारीगण व सहकर्मियों के प्रति कर्तव्य, कार्य-व्यवहार तथा चिकित्सा के सम्यक् संचालन हेतु उत्कृष्ट कार्य विभाजन एवं सामंजस्य।